ओसवाल प्रकाश

सम्पादिका : ममता सुराना

ओसवाल मित्र मण्डल का मासिक मुखपत्र R.N.I. No. MAHHIN/2000/4037

वर्ष - 14 अंक - 06 मुंबई -जून 2015 मूल्य - 1 रुपया

ओसवाल मित्र मंडल का गीत संगीत कार्यक्रम का सफल आयोजन सम्पन्न

Shri Mofatrajji Munot has been conferred with the prestigious 'Lifetime Achievement' Award by NDTV Property Awards,2014.
The Mandal wishes him all the success in his future ventures.

ओसवाल मित्र मंडल द्वारा आयोजित गीत संगीत कार्यक्रम जो कि ११ जनवरी २०१५ में वीर सावरकर आडीटोरियम में आयोजित किया गया था अत्यन्त सफल रहा,कार्यक्रम में लोगो ने भारी संख्या में उपस्थित रहकर नये पूराने गीतों का भरपूर आनंद लिया कई पूराने गीत जो आज की तारीख में भुले बिसरे गीतो की श्रेणी में आते है।

जब गायक गायिका उन गीतों को गा रहे थे तो हॉल में उपस्थित अधिकांश सदस्य उन गीतों को साथ साथ गुनगुनाते दिखाई दिये पूराने गीतों की मधुरता, मिठास तब और भी दुगनी हो जाती जब संचालक महोदय उस गीत के साथ जुडी घटनाँए,का सविस्तार जिक्र करते थे, संबधित गीत के साथ गीतकार, संगीतकार गायक वादक डायरेक्टर आदि के कमेंन्टस अनुभव जब संचालक श्रोताओ के समझ रख रहे थे तो यू प्रतीत होता था कि हम डन गीतो के स्वरबद्ध करते हुए लम्हो के स्वयं साक्षी है। पून: पून: वन्स मोर और तालियों की गडगडाहट, वातावरण को अधिक सुरीला बना रही थी ।

कार्यक्रम में मंडल के चेयर मेन श्री. सी.एल. जैन ने सभी का स्वागत किया मुख्य अतिथी श्री. मोफतराज मूणोत ने मंडल को संबोधित करते हुए कहा कि हमें अधिक से अधिक जैन भाई बहनो को जोडकर, जैन समाज हेतू अधिक से अधिक उपयोगी तथा शिक्षापद कार्य करने हेतू आगे आना चाहिये।

अंत में मंडल के सचिव श्री. अजित कुचेरिया ने मंडल द्वारा चलने वाली अन्य गतिविधियों से अवगत कराया। कार्यक्रम में भारी संख्या में उपस्थिती दर्ज कराने हेतू सभी का तहेदिल से आभार ज्ञापित किया । कूल मिलाकर गीत संगीत का यह कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा।

ओसवाल मित्र मण्डल के सदस्य कैसे बने ?

का आजीवन सदस्यता 5,500/- रुपये आप भी मण्डल से जुड़कर सेवाकार्यो में सहयोग देवें ! अधिक जानकारी हेतु ऑफीस के पुन्नालालजी भाटीया 022-26287187 पर संपर्क करे.

मंडल के कर्मठ कार्यकर्ताओं को मुख्य अतिथी पुरस्कार प्रदान करते हुए

Audience enjoying the Program

Shri. C.L. Jain, Mofatraji Munot, Madanchanji Parekh & Ajit Kucheria

Dr. Prakashji Bora receiving the Award at the hands of Shri. Mofatraji Munot

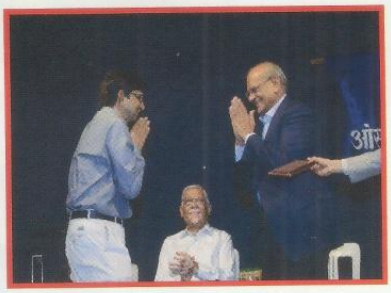

Dr. Prakashji Bora

Ms. Aqui of Dharavi Art Room

Shri. Ajit Kucheria handing over the momento to the Chief Guest Shri. Mofatraji Munot

Shri. sajit Kucheria

Shri. B. S. Verdiaji receiving the award at the hands of Shri. Mofatraji Munot

Shri. C.L. Jainji Garlanding the Chief Gust Shri. Mofatraji Munot

Shri. C.L. Jainji Receiving the Award at the hands of Shri. Mofatraji Munot

Shri. I. C. Baidji Receiving the Award at the hands of Shri. Mofatraji Munot

Shri. Mahendraji Kumbhat receiving the Award at the hands of Shri. Mofatraji Munot

सम्मानित कार्यकर्त्ताओ के नाम व कार्यक्षेत्र इस प्रकार है-

- डॉ. प्रकाशजी व अरुणाजी बोरा -एड्स अवेरनेस हेतू
- श्रीमती. ममता शशीकांत सुराना ओसवाल प्रकाश के सफल संपादन हेतू
- श्रीमती. सरिता दूग्गड व रैनी सुराना-संगीता जैन टैलेण्ट प्रोग्राम हेतू

Shri. Manoharji Iyer

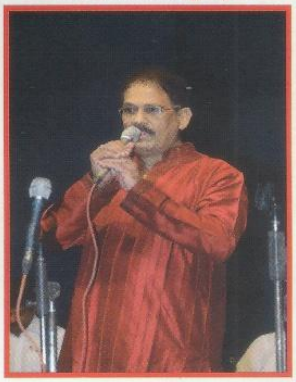

Singer Vrushali

Shri. S.P.Sakhlaji Receiving the Award at the hands of Shri. Mafatraji Munot

Shri.Sushant Deshmukh of Dahanu Adivasi Educational Project

Shri.Vinod of organ Donation Project

Shri. Mafatraji Munot

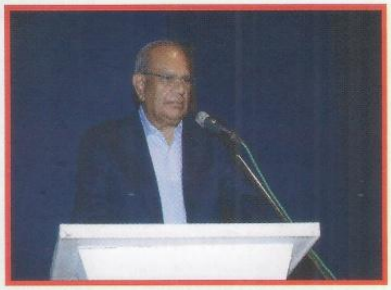

Singer Sagar & Rana

Smt. Arunaji Bora receiving the Award at the hands of Shri, Mofatraji Munot

Smt. Mamtaji Surana receiving the Award at the hands of Shri, Mofatraji Munot

Smt. Manjuji Lodha receiving the Award at the hands of Shri, Mofatraji Munot

Smt. Saritaji Dugar receiving the Award at the hands of Shri, Mofatraji Munot

Shri. Madanchanji receiving the Award at the hands of Shri, Mofatraji Munot

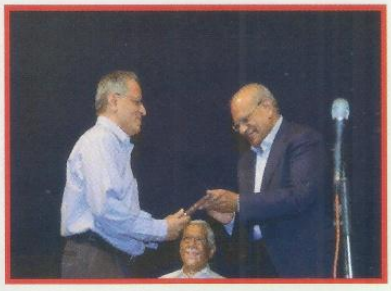

भव्य रंगारंग एवं सुंदर आयोजन

- श्री इंदरचंद जी बैद- मैट्रीमोनियल बायोडेटा बैक हेतूश्रीमती मंजू लोढ़ा-टैलेण्ट प्रोग्राम हेतू
- श्री सी.एल.जैन-संगीत जैन टैलेण्ट प्रोग्राम व स्कॉलरशीप की वर्षानुवर्ष स्पान्सर शीप हेतू
- श्री महेन्द्र जी कुम्भट - मुलुण्ड होस्टल व जैन मैट्रीमोनियल हेतू
- श्री हेमराज जी जैन- कार्यक्रमो की व्यवस्था हेतू
- श्री अजीत जी कुचेरिया -संस्था संचालन हेतू

मुसाफिर हूँ यारो.....

एक समय की घटना है। एक साधु किसी राजमहल के सामने पहुंचता है, ज्ञान का प्रचार करते हुए और राजा के संदेश भिजवाता है कि हम एक रात इस धर्मशाला में ठहरना चाहते है। राजा ने साधु को बुलवाया और ठहरने के लिए अनुमति प्रदान करते हुए बहुत ही विनम्र भाव से पूछता है- यह तो मेरा इतना सुंदर व भव्य महल है। इसको आप धर्मशाला क्यों कह रहे है? तब साधु ने राजा पूछा आपसे पूर्व इस महल में कौन रहते थे? राजा ने उत्तर दिया मेरे पिताश्री । अब वे कहां है? साधु ने पुन: पूछा तब राजा कहता है- स्वर्गवास हो गया उनका ।आपके पिताजी के पहले इस महल में कौन रहता था? साधु राजा से पूछता है। तब राजा कहता है मेरे पितामह रहते होगे। अब वे कहां है।? पुन: साधु के पूछने पर राजा उत्तर देता है-वे भी स्वर्ग सिधार गए। अब साधु कहता है- तब यह धर्मशाला नही तो क्या है? तुम्हें भी एक दिन यह महल छोडकर जाना होगा।

प्रतिदिन हम प्राणियों को मृत्यु के आगोश में जाते हुए देखते है। हमारे कितने ही स्वजन, रिश्तेदार और देश के बड़े-बड़े नेता, फिल्मी अभिनेता को अपने मृत्यु का आलिंगन करते देखा है लेकिन फिर हम तो यही सोच रहे है कि हमें तो हमेशा यहां रहना हैं और मित्रों। हमेशा यहां रहने की समझ ही संसार में लोभ लालच, ईर्ष्या-द्वेष और अधिकाधिक भौतिक वस्तुओं का संग्रह तथा अपराधों का कारण है। यदि किसी मनुष्य को यह बता दिया जाए कि उसकी कल मृत्यु निश्चित है, सिर्फ चौबीस घंटे ही है उसके पास, तो वह कई गलत कार्य नही करेगा और ज्ञानी, ध्यानी, वैरागी इतना हो जाएगा कि पूछिए मत । कहा है-

आया हूं मैं कहां से, नही मुझे मालूम,
जाना मुझको है कहां, नही मुझे मालूम ।
नहीं मुझे मालूम, ये ठहराव क्षणिक है।
कर लीजिए अच्छे काम नही समय अधिक है।।
शुरु से ही हो तैयारी, वापिस जाने की।
कब कैसें कहां रुके, ये बारात काने की।।

दो बातें है। एक तो इस संसार से वापिस जाना है यह बात हमेशा याद रहे और दूसरी बात कर लीजिए अच्छा काम, । अब प्रश्न यह उपस्थित होता है कि अच्छा काम क्या है? तो संत महात्मा इसका उत्तर दे, रहे है- सत्संग, सेवा भजन-सुमिरण मे कुछ समय बीता । यह नही कि संसार को त्याग देना है, बल्कि संसार में ही रहते हुए ईश्वर का चिंतन-मनन और नित्यप्रति ईश्वर का गुणानुवाद सुनना और करना तथा अन्य लोगों को प्रेरित करना ज्ञान के मार्ग पर आरुढ़ होने के लिए।यदि इन दो बातों को भूल गए तो कही ठौर -ठिकाना नही है।

याद रहें मित्रों, एक दिन ऐसा आएगा कि सारा किए कराये पर पानी फिर जाएगा, सब चीजों से हाथ धोना पड़ेगा सब कुछ आखिर यहां छूटजाना है, धन-रिश्ते, मान-सम्मान, विद्वता, अनेकानेक सर्टिफीकेट जिसे पाकर गर्व हुआ था यह सब यहीं छुट जाएगा। लेकिन एक चीज साथ जा सकती है और वह है प्रभु का चिंतन । गुरु महाराज जी कह रहे है-जिनको ज्ञान है, जो नित्य सत्संग-सेवा भजन में लगे हुए है वे खाली हाथ आये जरुर थे लेकिन खाली हाथ जाने की जरुरत नही है। इसलिए सजग होकर, सचेत होकर इस तथ्य को स्वीकार करना है कि हम मुसाफिर है धर्मशाला के, और हमारा हित इसी में है कि अपने लक्ष्य की पूर्ति में लग जाएं जिससे यह जीवन सफल और सार्थक हो ।

R. N. I Registration No. MAHHIN/2000/4037
Postal Reg.No. MCS/037/2015-17
Posted at Mumbai Patrika Channel Sorting Office, Mumbai-1
Date of Publication - 10th of Every Month.
Posting Date 14th & 15th of Every Month.
WPP LICENSE NO - MR/TECH/WPP-123/SOUTH/2015
License to post without pre payment

From : Oswal Mitra Mandal
59, Jolly Maker Chambers No.2, 225,
Nariman Point, Mumbai - 400 021.
Phone : 2202 2306.

स्वत्वाधिकारी ओसवाल मित्र मंडल के लिए प्रकाशक, मुद्रक अजीत कुचेरिया द्वारा सुशील कापी सेन्टर, ५२ - ए, एन.एम. रोड फोर्ट, मुंबई - ४०० ०२३. से मुद्रित एवं ओसवाल मित्र मंडल, ५९ जॉली मेकर चेम्बर्स नं. २, नरीमन पाईंट, मुंबई - ४०० ०२१ से प्रकाशित

प्रकाशक - अजीत कुचेरिया
संरक्षिका - मंजु मंगलप्रभात लोढ़ा
सम्पादिका - ममता सुराना (मो. 9833938604)
B.SC., LL.B. (Gold Medal), Vishard (Vocal)
सम्पादकीय पता -
यशोवन, १३०२, टी.एच.कटारिया मार्ग, माहिम (प.), मुंबई - १६.
Email : mamata.surana@gmail.com